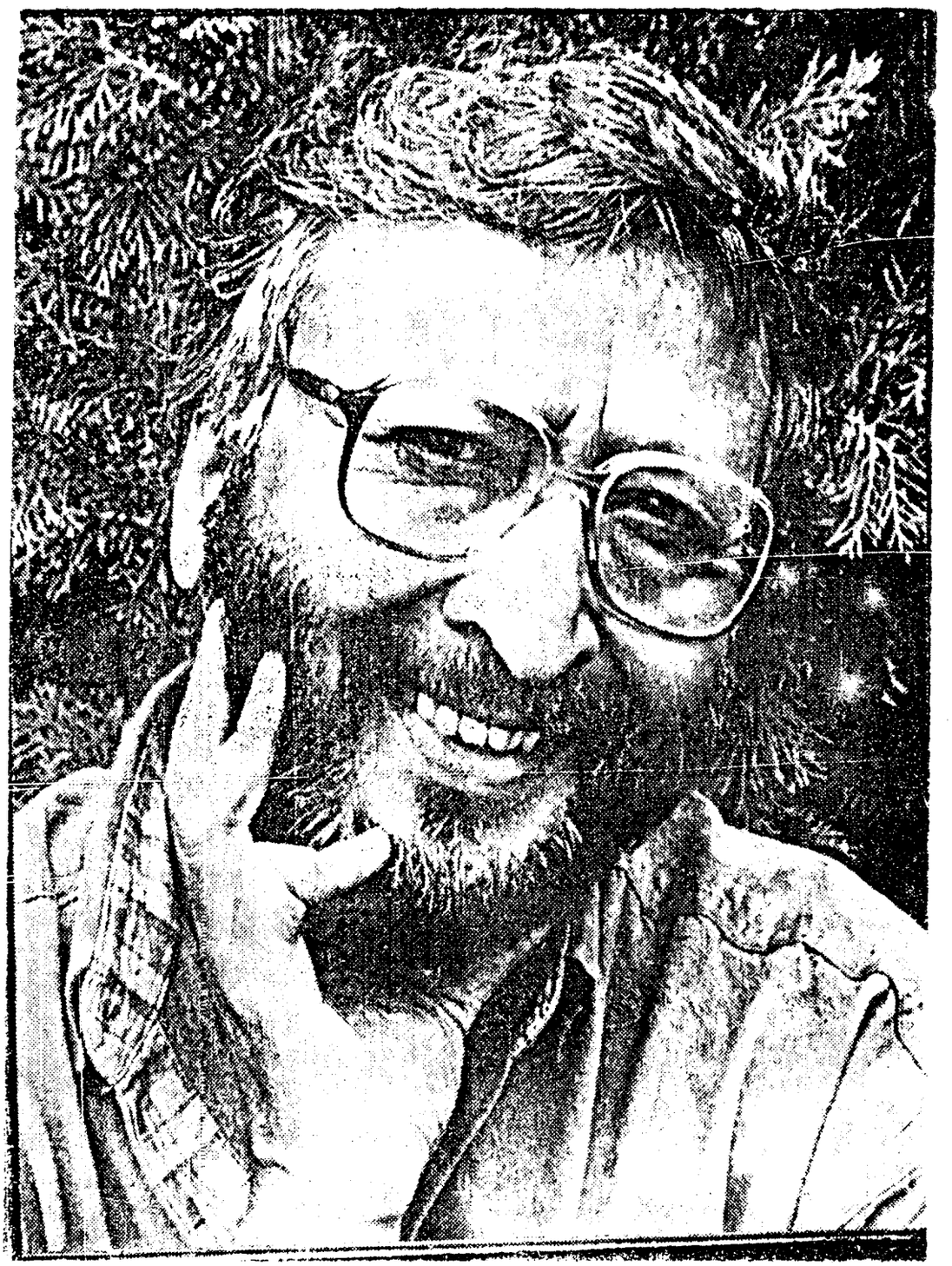

डॉ. देवेश ठाकुर

प्र मा ण प त्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु-शोध प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

१९ मई, ९४

अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर

19-5-94
Head, Hindi Dept.
Shivaji University,
Kolhapur-416 004.

-: प्र ख्या प न :-

यह लघु-शोध प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल्. के लघु-शोध प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

सांगली — प्रा. सौ. माधवी संजय बागी

दिनांक : २९ मई, १९९४ — शोध - छात्रा

डॉ. वसंत केशव मोरे
एम्. ए., पीएच्. डी.
भूतपूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
तथा
अध्यक्ष, महाराष्ट्र हिन्दी परिषाद
एवं
सदस्य, महाराष्ट्र हिन्दी साहित्य
अकादमी

-: प्र मा ण - प त्र :-

मैं प्रमाणित करता हूँ कि सौ. माधवी संजय बागी ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्. फिल् [हिन्दी] उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु - शोध - प्रबंध " देवेश ठाकुर के "भ्रमभंग" उपन्यास का अनुशीलन " मेरे निर्देशन में सफलता - पूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह कार्य पूर्व योजनानुसार संपन्न हुआ है। यह परीक्षार्थी की मौलिक कृति है। सौ. माधवी संजय बागी के प्रस्तुत शोध - कार्य के बारे में पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

कोल्हापुर

दिनांक : २९ / मई / १९९४

[डॉ. वसंत केशव मोरे]
शोध निर्देशक

प्रा क्क थ न

प्रा क्क थ न

आधुनिक हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में उपन्यास विधा सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय है। यह विधा जीवन और यथार्थ के अत्यंत ही निकट रही है। उपन्यास युग तथा समाज के संदर्भ में बदलते मानव - जीवन का व्यापक चित्र प्रस्तुत करता है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में भारतीय जीवन को यथार्थ रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास हुआ है। वर्तमान काल के उपन्यास साहित्य में दो प्रमुख प्रवृत्तियाँ मिलती हैं, + एक साम्यवादपर आधारित सामाजिक यथार्थवाद की और दूसरी मनोविश्लेषण की। डॉ. देवेश ठाकुर के उपन्यासों इन दोनों प्रवृत्तियों से युक्त नयी मानवतावादी दृष्टि व्यक्त हुयी है।

प्रेरणा

एम्. ए. तथा एम्. फिल की परीक्षाओं में विधा विशेष उपन्यास के अध्ययन के समय रंगभूमि, सुनीता, झूठासच, चित्रालेखा, बाणभट्ट की आत्मकथा, मैला आँचल, आपका बंटी और भ्रमभंग आदि उपन्यास पढने के सुअवसर प्राप्त हुये थे। "भ्रमभंग" उपन्यास पढते समय उसके कथ्य तथा शिल्प में नूतन प्रयोगशीलता दिखाई पडी। अत: उपन्यासकार डॉ. देवेशजी की औपन्यासिक प्रस्तुति शिल्प को लेकर कुतूहल तथा जिज्ञासा निर्माण हुयी। इसलिए लघुशोध-प्रबंध के लिए मैंने "'भ्रमभंग" उपन्यास का अनुशीलन" इस विषय का चयन करने का दृढसंकल्प किया। प्रस्तुत शोध प्रबंध के रूप में मेरा वह संकल्प साकार हुआ है।

देवेश ठाकुर के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर अबतक सात शोधकर्ताओं ने एम्. फिल. तथा पीएच्. डी. के लिए शोधकार्य किये हैं।

अ] पीएच्. डी. :-

१] हिन्दी उपन्यासों में प्रयोगधर्मिता : देवेश ठाकुर के विशेष सन्दर्भ में
- कुमारी कमल चौरसिया [डॉ. हरी सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर १९९२]

२] देवेश ठाकुर और उनका उपन्यास साहित्य
- प्रो. पांडुरंग सटुप्पा पाटील [शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर १९९२]

३] देवेश ठाकुर : व्यक्तित्व और कृतित्व - एक अनुशीलन
- आत्माराम नारायण दाभिलकर [नागपुर विश्वविद्यालय, १९९३]

आ] एम्. ए. तथा एम्. फिल. :-

१] देवेश ठाकुर का उपन्यास साहित्य
- कु. रीता डानियल [नागपुर विश्वविद्यालय, १९८५]

२] देवेश ठाकुर के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय समस्यायें- एक अनुशीलन
- प्रा. नन्दकुमार रामचन्द्र रानभारे [शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, १९९०]

३] देवेश ठाकुर के उपन्यास : मध्यवर्ग की समस्याओं का सन्दर्भ : "जनगाथा" के विशेष सन्दर्भ में
- वेदना जैन [आगरा विश्वविद्यालय, १९९०]

४] उपन्यासकार देवेश ठाकुर
- कु. संगीता व्यास [उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद १९९०-९१]

"भ्रमभंग" के संदर्भ में स्वतंत्र रूप में शोधकार्य अबतक संपन्न नहीं हुआ है |

"भ्रमभंग" उपन्यास के अनुसन्धान के प्रारम्भ में मेरे मन में निम्नांकित प्रश्न निर्माण हुए थे |

१] क्या चन्दन की कथा देवेशजी की नीजी कथा है१

२] चन्दन ने कौन कौन से भ्रम पाले थे१

३] क्या चन्दन का चरित्रा युवा-पीढी के लिए प्रेरणादायी है१

४] देवेशजी की जीवन-दृष्टि क्या है१

५] "भ्रमभंग" की भाषा-शैली में कौनसी नवीनता है१

इन प्रश्नों के उत्तर अनुसंधान की उपलब्धियों के रूप में उपसंहार में दिए हैं |

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु-शोध प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित किया है |

प्रथम अध्याय : देवेश ठाकुर व्यक्तित्व तथा कृतित्व

किसी भी साहित्यिक कलाकृति के सम्यक अनुशीलन के लिए रचनाकार के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का अध्ययन आवश्यक होता हैं | इस अध्याय में मैंने देवेश ठाकुर के जीवन परिचय के अंतर्गत पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा, व्यवसाय, विवाह, संतान, जीवनसंघर्ष एवं प्राप्त पुरस्कार तथा उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है | कृतित्व के अंतर्गत रचनाधर्मी साहित्यिक और प्रगतिशील समीक्षक के रूप में डॉ. देवेशजी की साहित्यिक रचनाओं का संक्षेप में सामान्य परिचय प्रस्तुत किया है |

द्वितीय अध्याय : "भ्रमभंग" उपन्यास की कथावस्तु

देवेशजी ने "भ्रमभंग" उपन्यास में शिल्पगत प्रयोगधर्मिता प्रस्तुत की है | अत: इस उपन्यास के अनुशीलन में मैंने अपने अध्ययन की सीमा को सूचित किया है | "भ्रमभंग" के कथ्य तथा पात्र को लेकर अबतक बहुत कुछ कहा गया है, उसके प्रस्तुति-शिल्प के सूक्ष्म अध्ययन की आवश्यकता रही है | अत: मैंने प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध में उपन्यास के अन्य तत्वों का सामान्य परिचय देकर प्रस्तुति - शिल्प [भाषा तथा शैलीगत अध्ययन] का साधार विवेचन किया है | द्वितीय अध्याय में "भ्रमभंग" की कथावस्तु का अध्यायगत विवरण देकर उसकी विशेषताओं को बताया है |

तृतीय अध्याय : "भ्रमभंग" उपन्यास के पात्र तथा कथोपकथन

यह अध्याय "अ" और"आ" में विभाजित है | "अ" में "भ्रमभंग" उपन्यास के पात्रों का परिचय प्रस्तुत है | प्रमुख रूप से नायक चन्दन के चरित्र की विशेषताओं [लघुमानव, ईमानदार, संघर्षशील, विद्रोही, कर्मठ, प्रगतिशील और प्रतिबध्द आदि] का विश्लेषण करके सुमन, शुभी आदि गौण पात्रों का सामान्य परिचय दिया है | तथा "आ" में "भ्रमभंग" में प्रयुक्त कथोपकथन का सोदाहरण विवेचन किया है |

चतुर्थ अध्याय : "भ्रमभंग" उपन्यास में देश-काल-वातावरण तथा उद्देश्य

इस अध्याय के "अ" विभाग में देश-काल-वातावरण का विवेचन प्रस्तुत किया है | देश-काल-वातावरण के अंतर्गत मैंने बम्बई महानगरीय जीवन का तथा प्रकृति का चित्राण किया है | जिसमें आवास, यातायात, होटल - क्लब संस्कृति, मध्यवर्गीय का आर्थिक जीवन, मुक्त यौन सम्बन्ध, गुण्डागर्दी और भ्रष्टाचार का माहौल आदि का सोदाहरण विवेचन किया है |

"आ" विभाग में "भ्रमभंग" के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए विद्वानों के अभिप्राय प्रस्तुत किये हैं | जीवन के व्यवस्था परिवर्तन के लिए सार्थक विद्रोह की आवश्यकता है | वर्तमान जीवन की समस्त समस्याओं का समाधान सार्थक विद्रोह करके व्यवस्था के परिवर्तन में हैं | देवेशजी के इस जीवन-सिध्दांत का सम्यक् विवेचन किया है |

पंचम अध्याय : "भ्रमभंग" उपन्यास का प्रस्तुति-शिल्प

प्रस्तुत अध्याय में "प्रस्तुति शिल्प" के अंतर्गत भाषा तथा शैली का शिल्पगत अध्ययन प्रस्तुत किया है | भाषा के विवेचन में शब्द-प्रयोग के विभिन्न रूप, भाषा सौन्दर्य के साधन, शब्दशक्तियाँ, प्रतीक, बिम्ब, मुहावरें और कहावतें, सूक्तियाँ वाक्य विश्लेषण आदि का साधार अध्ययन प्रस्तुत किया है |

शिल्प के अंतर्गत शैली के स्वरूप का विवेचन करके "भ्रमभंग" में प्रयुक्त विविध शैलियों का - आत्मकथात्मक, पत्रात्मक, डायरी, पूर्व दिप्ती, चेतना प्रवाह, दृश्य, नाटय, संवाद, समय विपर्यय, विश्लेषणात्मक, सांकेतिक, प्रतीकात्मक, एकालाप, व्यंग्यात्मक, विसादृश्य, सिनेरिया, चिह्न, विवरणात्मक - सोदाहरण अध्ययन प्रस्तुत किया है |

उपसंहार

इस शीर्षक के अन्तर्गत "भ्रमभंग" के अनुशीलन के निष्कर्षों की प्रस्तुति एवं उसके अनुसंधान से प्राप्त उपलब्धियाँ तथा अनुसंधान की नयी दिशा की ओर संकेत किया हैं |

परिशिष्ट

इस प्रबंध के अन्त में चार परिशिष्ट जोड दिये हैं |

प्रथम : "देवेश ठाकुर : संक्षिप्त परिचय" |

द्वितीय : "देवेश ठाकुर के अबतक प्रकाशित ग्रन्थ |"

तृतीय : "डॉ. देवेशजी से प्राप्त पत्र |"

चतुर्थ : "डॉ. देवेश ठाकुर से एक साक्षात्कार |"

संदर्भ ग्रन्थ - सूचि

प्रबंध के अन्त में संदर्भ ग्रन्थ - सूचि दी गई है |

ऋण निर्देश

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले तथा मुझे समय समय पर प्रोत्साहित करनेवाले गुरुजनों, परिवार के सदस्यों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ ।

यह लघु-शोध प्रबंध श्रध्देय, गुरुवर्य डॉ. वसंत केशव मोरे, एम्. ए., पीएच्. डी., भूतपूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के उदार एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के आत्मीय एवं प्रेरक निर्देशन का फल है । उन्होंने अपनी कार्यव्यस्तता के बावजूद भी समय समय पर मेरे लेखन की त्रुटियों को दूर करके मुझे सही दिशा में मार्गदर्शन किया । उनके प्रति अपनी कृतज्ञता इन शब्दों में प्रकट करना मेरे लिए संभव नहीं है । उनकी धार्मपत्नी प्रा. सौ. मीनादेवी मोरेजी [अन्टीजी] ने भी मेरे साथ आत्मीयता का भाव प्रदर्शित करके मुझे लेखन कार्य में प्रोत्साहित किया । मैं उनके प्रति सदैव कृतज्ञ रहूँगी ।

श्रध्देय डॉ. देवेशजी की इस प्रबंध लेखन के कार्य में मुझे बडी सहायता मिली है । आपके लिए मैं अपरिचित होते हुए भी, "भ्रमभंग" के सन्दर्भ में भेजी गयी प्रश्नावली के उत्तर आपने तुरन्त भेजे थे । साथ ही शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, में आपने साक्षात्कार के लिए मुझे समय देकर उपकृत किया था । साक्षात्कार के समय आपने मुझे जो पिता सदृश्य ममता का परिचय दिलाया उसे मैं कभी भूल नहीं सकती । आशिर्वाद के रूप में आपसे एक नयी प्रकाशित रचना "पाण्डुलिपि" पाकर मैं बहुत प्रसन्न हुई थी । मेरे प्रस्तुत शोध कार्य में इस ग्रन्थ से मुझे बहुत सहायता मिली है । आपके आशीर्वाद तथा मार्गदर्शन की मैं सदैव कृतज्ञ रहूँगी ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष, डॉ. पी. एस्. पाटील से मुझे प्रस्तुत अध्ययन में मौलिक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है । तथा प्रा. डॉ. अर्जुन चव्हाण ने भी मुझे इस शोध कार्य में बहुत प्रोत्साहन दिया है । उनके प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ ।

इस शोधकार्य की पूर्णता का श्रेय मेरे पति श्री. संजयजी को है, जिसने मुझे पारिवारिक चिंताओं से मुक्त रखा और मुझे समय समय पर गतिशील बना दिया। मेरे ससुर श्री. वसुपालजी तथा सास श्रीमती शकुंतलाजी के शुभाशीर्वाद से ही मैं इस कार्य को पूर्ण कर सकी।

मेरे आदरणीय, पूज्य पिताश्री, प्राचार्य नेमिनाथ गुंडेजी से प्रेरणा पाकर ही मैं इस शोध क्षेत्र में पदार्पण करने का साहस कर सकी। श्रध्देय नानी माँ श्रीमती आनंदीजी एवं पूज्य माताश्री श्रीमती देवयानीजी की स्नेहमयी ममता सदैव मेरे साथ रही है। पूज्य माता-पिता के आशीर्वाद से ही यह शोध कार्य संपन्न हुआ है। अत: मैं उनके ऋण में सदैव रहूँगी।

मेरे परिवार के अन्य सदस्य - भाई आदिराज, भाभी रिध्दिमा, बडी बहन सुषामा और उनके पति गुणवन्त, बहन मनीषा तथा उनके पति चंद्रकांत - जिन्होंने मुझे प्रस्तुत कार्य में सदैव सक्रिय प्रोत्साहन एवं सहयोग दिया है। उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। मेरी छोटी बहन अश्विनी तथा बेटे कुशाल का सहकार्य भी इस कार्य पूर्ति में महत्वपूर्ण रहा है। इसे मैं कभी नहीं भूल सकती।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर के ग्रंथपाल, सांगली के श्रीमती कस्तुरबाई वालचंद महाविद्यालय तथा एन्. डी. पाटील रात महाविद्यालय के ग्रंथालयों के ग्रंथपालों के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ।

अंत में इस लघुशोध - प्रबंध को अत्यंत कम समय में टंकित करनेवाले श्री. एस्. एस्. परदेशी को हार्दिक धान्यवाद देती हूँ।

x x x x x x x
x x x x x
x x x

x x x x x x x
x x x x x
x x x

x x x x x x x
x x x x x
x x x